P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-4* December- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक शिक्षकों के जीवन कौशलों का उनके व्यावसायिक समायोजन से सम्बन्धः एक अध्ययन

Relationship of life skills of secondary teachers with their Professional Adjustment: A study

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 20/12/2021, Date of Publication: 21/12/2021

गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
डी.बी.एस. कालेज ,
कानपुर उत्तर प्रदेश, भारत

अर्चना अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश,
भारत

सारांश

भारतीय समाज में लैगिंक असमानता की समस्या बहुत समय से चली आ रही है। उसका प्रभाव आज भी भारतीय समाज के आचारों-विचारों में पाया जाता है। अतः पुरुष व महिला शिक्षकों पर भी उसका प्रभाव पडना स्वाभाविक ही है। सरकारी विधालयों के पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशलौं व व्यावसायिक समायोजन का स्तर महिला शिक्षकों से उच्च है। स्ववित्तपोषित विधालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशलौं का स्तर महिला शिक्षकों से उच्च है परन्तु व्यावसायिक समायोजन का स्तर महिला शिक्षकों से निम्न है। यहॉ पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशलौं का महिला शिक्षकों से अधिक होने का कारण उनके प्रति परिवार व समाज का अलग-अलग व्यवहार है व व्यावसायिक समायोजन में अन्तर का कारण उनके कार्यस्थल की दशाऐं है

The problem of gender inequality in Indian society has been going on for a long time. Its influence is still found in the ethics and thoughts of Indian society. Therefore, it is natural to have an impact on male and female teachers as well. The level of life skills and professional adjustment of male teachers of government schools is higher than that of female teachers. The level of life skills of male teachers working in self-financing schools is higher than that of female teachersBut the level of professional adjustment is lower than that of female teachers. Here the reason for the life skills of male teachers more than female teachers is the different behavior of family and society towards them and the reason for the difference in professional adjustment is the conditions of their workplace.

मुख्यशब्दः जीवन कौशल ,व्यावसायिक समायोजन , मूल्य।
Keywords: Life Skills, Vocational Adjustments, Values.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा ने ही मानव को पशु से मनुष्य बनाया है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों की पहचान करके उनका विकास किया जाता है। इसके द्वारा मनुष्य के ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। वैदिक युग से यह परम्परा चली आ रही है। वैदिक युग में गुरू शिष्य के सम्बन्ध पिता-पुत्र के समान स्नेहपूर्ण थे। गुरू को शिष्य के विषय में सम्पूर्ण जानकारी रहती थी। उसके ज्ञान, क्षमता, अक्षमता व कमजोरियों सभी को गुरू भली भांति जानता था। आज जनसंख्या वृद्धि व शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण छात्रों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। जिसके कारण शिक्षक छात्र अनुपात में असंतुलन पैदा हो गया। परिणामस्वरुप अध्यापक छात्र के बीच सम्पर्क में कमी आयी है। आज यह स्थिति है कि सम्पूर्ण वर्ष के उपरान्त भी अध्यापक सभी छात्रों का नाम तक नहीं जान पाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि छात्रों में आवश्यक जीवन कौशलों का विकास नहीं हो पाता। छात्रों में जीवन कौशलों का विकास करने के लिये शिक्षकों को जीवन कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षक अपने ज्ञान को छात्रों तक सर्वोत्तम रुप में तभी पहुॅचा सकता है जब वह व्यावसायिक रुप से भी समायोजित हो।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राऐं किशोरावस्था की आयु तथा वर्तमान भारतीय परिस्थितियों को देखते हुये उनमें जीवन कौशलों का विकास करना अति आवश्यक है। शिक्षक अपने विषय में कितना भी पारंगत क्यों न हो यदि उसमें व्यावसायिक समायोजन का अभाव है तो निश्चित रूप से वह एक सफल शिक्षक नहीं हो सकता है। एक सफल शिक्षक वह ही है जो अपने विद्यार्थियों को समस्याओं से लड़ने योग्य बनाता है व उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक गुणों का विकास भी करता है।

साहित्यावलोकन

जैन , पारस (2017) ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलों का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि जीवन कौशलों की शिक्षा प्राप्त शिक्षक वास्तविक जीवन में आने वाली परिस्थितियों को भली भांति समझ पाते हैं तथा उनका बुद्धिमत्ता पूर्ण ढंग से समाधान भी कर पाते हैं।

रस्तोगी , नुपुर (2018)ने उच्चशिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा की उपादेयता पर अध्ययन कार्य किया । शोध का निष्कर्ष यह था कि उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा को सम्मिलित किया जाना

चाहिए। जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता बढाने के लिये जिला स्तर पर सास्ंकृतिक कार्यक्रमों का आयोजन ,प्राचार्यों को जीवन कौशल शिक्षा के प्रशिक्षण क्रार्यक्रमों में प्रतिभाग करने को प्रेरित करना , शिक्षकों को जीवन कौशल शिक्षा के प्रशिक्षण क्रार्यक्रमों में प्रतिभाग करने को प्रेरित करना ,जीवन कौशल शिक्षा पर राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम का विकास करना तथा सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में जीवन कौशल की शिक्षा को सम्मिलित करना आदि महत्तवपूर्ण सुझाव उपर्युक्त अध्ययन में दिये गये।

अहमद एवं खान (2016) ने माध्यमिक शिक्षकों के समायोजन का उनके शैक्षिक योग्यता , शैक्षिण अनुभव तथा निवास स्थान के संदर्भ में अध्ययन किया । अपने अध्ययन में उन्होंने पाया -1. माध्यमिक शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता का उनके समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

1. अध्ययन में 95ः केसेज में पाया गया कि शिक्षकों के शिक्षण अनुभव का उनके समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. माध्यमिक शिक्षकों की लोकेलिटी का उनके समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अहमद , खान (2019) ने रायपुर शहर के माध्यमिक विधालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर शहर के माध्यमिक विधालयों के 240 शिक्षकों (130 पुरुष तथा 110 महिला) तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 शिक्षकों (110 पुरुष तथा 90 महिला) को न्यादर्श के रूप में चयनित किया।अध्ययन के परिणाम -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समायोजन का स्तर संतोषजनक पाया गया।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन का स्तर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से उच्च पाया गया।
3. माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया।

21वीं शताब्दी में जहाँ छात्रों में ढ़ेरों अवगुण उत्पन्न हो रहे है, मूल्यों का ह्रास हो रहा है, स्वार्थ प्रवृत्ति चरम पर है वहाँ ऐसे शिक्षकों की अत्यधिक आवश्यकता है जो छात्रों के अवगुणों को दूर कर मूल्यो को विकसित कर उन्हें एक योग्य व कुशल नागरिक बना सकें।

अतः वर्तमान भारतीय समाज व शिक्षा की बदलती परिस्थितियों को देखते हुए शोधकर्ता को माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के जीवन कौशलों का उनके व्यावसायिक समायोजन से सम्बन्ध का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुयी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों व समाज के लिए लाभप्रद सिद्व होगें।

माध्यमिक शिक्षक

माध्यमिक शिक्षक से अर्थ कक्षा-9 से कक्षा-12 तक के छात्रों को पढ़ाने वाले शिक्षकों से है।

चर

1. स्वतन्त्र चर - जीवन कौशल
2. आश्रित चर - व्यावसायिक समायोजन

अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलों तुलनात्मक का अध्ययन करना।
2. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकां के व्यावसायिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. स्ववित्तपोषित विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. सरकारी विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलौं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. सरकारी विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. स्ववित्तपोषित विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलौं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
4. स्ववित्तपोषित विधालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव व्याख्या

तालिका संख्या -1

जीवन कौशल मापनी पर शिक्षक -शिक्षिकाओं के मध्यमान , मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात (CR)का मान

शिक्षक/ शिक्षिकांए	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR'मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	206.45	51.884	3.263	सार्थक	अस्वीकृत
शिक्षिकांए	100	180.25	61.289			

* 0.05सार्थकता स्तर पर CR का सारणी मान = 1.97

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में जीवन कौशल मापनी पर प्राप्त 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 206.45 व 180.25 मानक विचलन 51.88 तथा 61.29 तथा क्रान्तिक अनुपात (ब्त्) का मान 198स्वतन्त्रता स्तर पर 3.263 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से अधिक है।

परिणाम की व्याख्या

अतः माध्यों के बीच अन्तर सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना " सरकारी विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है " अस्वीकृत की जाती है। पुरूष व महिला शिक्षकों के माध्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों के जीवन कौशलों का स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च है । अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि सरकारी विधालयों के पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशलों का स्तर महिला शिक्षकों से उच्च हैं।

परिणाम की विवेचना

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि सरकारी विधालयों के पुरुष शिक्षकों के जीवन कौशलों का स्तर महिला शिक्षकों से उच्च है। इसका कारण यह है कि जीवन कौशलों के विकास में सामाजिक पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। यदि हम भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार व उनमें स्त्रियों की स्थिति को देखें तो यहाँ स्त्रियों की स्थिति पुरुषों से निम्न है । यहाँ स्त्रियों को पुरुषों से कमतर माना जाता है। ऐसी मानसिक स्थिति के अभिभावक व समाज स्त्रियों में निर्णय लेने की क्षमता ,समस्या समाधान क्षमता , अर्न्तवैक्तिक सम्बन्ध बनाने व प्रभावपूर्ण सचांर करने के अवसर उपलब्ध नहीं कराते । इसका परिणाम यह होता है कि उपर्युक्त कौशलों का विकास बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में अधिक होता है।

तालिका संख्या -2

शिक्षक समायोजन मापनी परशिक्षक -शिक्षिकाओं के मध्यमान , मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान

शिक्षक/ शिक्षिकांए	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	55.23	4.888	3.185	सार्थक	अस्वीकृत
शिक्षिकांए	100	52.23	8.053			

* 0.05सार्थकता स्तर पर CR का सारणी मान = 1.97

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में शिक्षक समायोजन मापनीजीवन कौशल मापनी पर प्राप्त 100पुरूष व 100 महिला शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 55.23 व 52.23 मानक विचलन 4.888 तथा 8.053 तथा क्रान्तिक अनुपात (ब्त्) का मान 198 स्वतन्त्रता स्तर पर 3.185 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से अधिक है।

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि माध्यों के बीच अन्तर सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना " सरकारी विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है " अस्वीकृत की जाती है। पुरूष व महिला शिक्षकां के माध्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन का स्तरमहिला शिक्षकां की तुलना में उच्च है ।

परिणाम की विवेचना

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं सरकारी विधालयों के पुरुष शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजनका स्तर महिला शिक्षकों से उच्च है । इसका कारण सामाजिक है। भारतीय परिवारों में बालकों को विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के ज्यादा अवसर प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि बालक समाज में लोगों से लगातार अर्न्तक्रिया द्वारा अपने व्यवहार में आवश्यक सुधार करते रहते हैं। यही कारण है कि बालकों की समायोजन क्षमता भी बालिकाओं से अधिक होती है और इसका प्रभाव व्यावसायिक समायोजन पर भी पडता है।

तालिका संख्या -3

जीवन कौशल मापनी पर स्ववित्तपोषित शिक्षक -शिक्षिकाओं के मध्यमान , मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान

शिक्षक/ शिक्षिकांए	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	185.32	59.552	3.445	सार्थक	
शिक्षिकांए	100	155.41	63.187			अस्वीकृत

* 0.05सार्थकता स्तर पर CR का सारणी मान = 1.97

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में जीवन कौशल मापनी पर प्राप्त 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षकां के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 185.32 व 155.41 मानक विचलन 59.552 तथा 63.187 तथा क्रान्तिक अनुपात (ब्त्) का मान 198 स्वतन्त्रता स्तर पर 3.445 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से अधिक है।

परिणाम की व्याख्या

अतः माध्यों के बीच अन्तर सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना " स्ववित्तपोषितविधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के जीवन कौशलौं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है " अस्वीकृत की जाती है। पुरूष व महिला शिक्षकों के माध्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों के जीवन कौशलौं का स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च है ।

परिणाम की विवेचना

पुरूष शिक्षकों के जीवन कौशलौं का स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च है इसका कारण यह है कि जीवन कौशलौं में हम जिन गुणों का मापन कर रहे हैं उनमें से अधिकतर सामाजिक अर्न्तक्रिया से सम्बन्धित हैं । भारतीय समाज में बालकों को बालिकाओं की तुलना में अधिक सामाजिक स्वीकार्यता , सामाजिक सराहना , सामाजिक कार्यों में भागीदारी , सामाजिक स्वतंत्रता मिलती है । भारतीय समाज में महिलाओं को सामाजिक अर्न्तक्रिया के कम ही अवसर उपलब्ध हो पाते हैं। जिसके कारण पुरुषों में जीवन कौशलौं का स्तर महिलाओं की तुलना में अधिक पाया गया।

तालिका संख्या -4

शिक्षक समायोजन मापनी पर स्ववित्तपोषित शिक्षक -शिक्षिकाओं के मध्यमान , मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात (ब्त्) का मान

शिक्षक/ शिक्षिकांए	संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	सार्थकता	परिकल्पना
शिक्षक	100	46.20	7.687	−6.833	सार्थक	अस्वीकृत
शिक्षिकांए	100	53.82	8.078			

* 0.05सार्थकता स्तर पर CR का सारणी मान = 1.97

प्रदत्तों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका में जीवन कौशल मापनी पर प्राप्त 100 पुरूष व 100 महिला शिक्षकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 46.20 व 53.82 मानक विचलन 7.687 तथा 8.078 तथा क्रान्तिक अनुपात (ब्त्) का मान 198 स्वतन्त्रता स्तर पर - 6.833 है। यह मान .05 सार्थकता पर तालिका मान 1.97 से अधिक है।

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि माध्यों के बीच अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना " स्ववित्तपोषित विधालयों के पुरुष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है " अस्वीकृत की जाती है। पुरूष व महिला शिक्षकां के माध्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजनका जीवन स्तर पुरूष शिक्षकों की तुलना में उच्च है ।

निष्कर्ष

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि स्ववित्तपोषित विधालयों के महिला शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजनका स्तर पुरुष शिक्षकों से उच्च है । महिलाऐं पुरुषों की अपेक्षा अधिक धार्मिक, सन्तोषी सरल, नमनीय, मानसिक सुदृढ ,भावनात्मक रुप से समायोजित होती हैं। यह विशेषताऐं महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित करने में सहयोग करती है। यही कारण है कि महिलाऐं पुरुषों की अपेक्षा व्यावसायिक रुप से अधिक समायोजित बनाती हैं।

संदर्भ

1. *अस्थाना, एम., एवं वर्मा, के. बी. (2008). व्यक्तित्व मनोविज्ञान दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास*
2. *गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.*
3. *गुप्ता, एस .पी. (2007). सांख्यिकीय विधियाँ इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.*
4. *पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन*
5. *रूहेला एस. पी. (2012).शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्तः अग्रवाल पब्लिकेशन.*
6. *सिहं, ए. के. (2005). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान दिल्ली रू मोतीलाल बनारसीदास.*
7. *रस्तोगी , नुपुर (2018) उच्चशिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा की उपादेयता*